

॥ आयुश्यं सूक्तम् ॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उज्जहार प्राणैर्ह शिरह त्रुतिवासह पिनाकी ।  
ईशानो देवह स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविशा ह्युतेन ॥ १ ॥  
विभ्राजमानह सरिरस्य मध्या-द्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगत ।  
स ह्युतयुपाशानपनुदय घोरानिहायुशेणो ह्युतमत्तु देवह ॥ २ ॥  
ब्रह्मज्योतिर ब्रह्म पत्नीशु गर्भम यमादधात पूरुरूपम जयन्तुम ।  
सुवर्णरञ्जग्रहम अर्कम अर्च्यम तमायुशे वर्धयामो ह्युतेन  
॥ ३ ॥

श्रियम लक्ष्मीम औवलाम अश्विकाम गाम शश्ठीम च  
यामिन्द्रसेनेत्युदाहृत् ।  
ताम विदयाम ब्रह्मयोनिग्न सरूपाम इह आयुशे तर्पयामो घेउतेन  
॥ ४ ॥

दाक्षायज्ञ्यह सर्वयोनयह स योनयह सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाह ।  
ससूनवह सपतयह सयूथया आयुशेणो ह्युतमिदम जुशन्ताम ॥ ५ ॥  
दिवया गणा बहुरूपाह पुराणा आयुश्चिदो नह प्रमथनक्त वीरान ।  
तेभ्यो जुहोमि बहधा ह्युतेन मा नह प्रजाग्न रीरिशो मोत वीरान  
॥ ६ ॥

एकह पुरस्तात य इदम बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाह ।  
यमप्येति भुवनग्न साम्पराये स नो हविर्घृत मिहायुशेतु देवह  
॥ ७ ॥

वसून रुद्रान आदित्यान मरुतो अथ साधयान रुभून यरुशान गन्धर्वाश्च  
पित्रश्च विश्वान ।  
भृगून सर्पाश्चाम्गरिसो अथ सर्वान ह्युतग्न ह्यवा स्वायुश्या  
महयाम शश्वत ॥ ८ ॥  
विशेणो ह्यम नो अन्तमश्मयच्छ सहन्तय ।

প্রতেধারা মধুশ্চুত উখসম দুহতে অক্শিতম ॥  
ওম শান্তিহ শান্তিহ শান্তিহি ॥

[www.yousigma.com](http://www.yousigma.com)